जापानी बटेर पालन से रु. 25000 प्रति माह कैसे कमाएं!

कैरी उत्तम	कैरी उज्जवल	कैरी ब्राउन

डॉ. संदीप सरन

डॉ. जगबीर सिंह त्यागी

डॉ. अजीत सिंह यादव

डॉ. राज नारायण

भाकृअनुप-केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान

इज्जतनगर-243 122 (उ.प्र.)

ISO 9001:2008 Certified

जापानी बटेर पालन से रु. 25000 प्रति माह कैसे कमाएं!

डॉ. संदीप सरन
डॉ. जगबीर सिंह त्यागी
डॉ. अजीत सिंह यादव
डॉ. राज नारायण

भाकृअनुप
ICAR

एग्रीबिज़नेस इन्क्यूबेशन केन्द्र
भाकृअनुप–केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर–243 122, बरेली (उत्तर प्रदेश)

CENTRAL AVIAN RESEARCH INSTITUTE
ICAR
IZATNAGAR
19 79
ISO 9001:2008 Certified

जापानी बटेर पालन से रु. 25000 प्रति माह कैसे कमाएं!

©सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रकाशनः मार्च, 2024

लेखकः

डॉ. संदीप सरन, प्रधान वैज्ञानिक
डॉ. जगबीर सिंह त्यागी, प्रधान वैज्ञानिक
डॉ. अजीत सिंह यादव, प्रधान वैज्ञानिक
डॉ. राज नारायण, प्रधान वैज्ञानिक

अभिन्यास तथा प्रोडक्शनः
डॉ संदीप सरन
प्रधान वैज्ञानिक एवं मुख्य अन्वेषक, ए.बी.आई. परियोजना
केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली

प्रकाशकः
निदेशक
भाकृअनुप–केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर, बरेली–243 122 (उ.प्र.)
ईपीएबीएक्सः 91–581–2300204, 2301220, 2303223,
फैक्सः 91–580–2301321
ई मेलः director.cari@icar.gov.in
वेबसाइटः https://cari.icar.gov.in

डिस्क्लेमरः यद्यपि इस बुलेटिन की विषय वस्तु की सटीकता सुनिश्चित करने के सभी प्रयास किए गए हैं, इसे कानूनी बयान के रूप में या किसी अन्य कानूनी उद्देश्यों के लिए उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। केंद्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान विषय वस्तु की सटीकता, पूर्णता, उपयोगिता या अन्यथा के संबंध में कोई जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता है। उपयोगकर्ताओं को सलाह दी जाती है कि वे संबंधित अन्यत्र स्रोतों से जानकारी को सत्यापित/जांच करें, और बुलेटिन में दी गई जानकारी पर कार्रवाई करने से पहले किसी भी उपयुक्त क्षेत्रीय पेशेवर से सलाह प्राप्त करें। किसी भी सूरत में केंद्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इस बुलेटिन में दी गयी जानकारी या उसके उपयोग के संबंध में, किसी भी खर्च, नुकसान या क्षति सहित, बिना किसी सीमा, अप्रत्यक्ष या परिणामी नुकसान या क्षति, या उपयोग, या उपयोग के नुकसान से उत्पन्न किसी भी व्यय, हानि या क्षति के लिए उत्तरदायी नहीं होगा।

मुद्रकः
बाइट्स एण्ड बाइट्स, मो.: 94127 38797

जापानी बटेर पालन से रु. 25000 प्रति माह कैसे कमाएं!

भारत में व्यवसायिक मुर्गी पालन (चिकन फार्मिंग) के बाद बत्तख पालन और तीसरे स्थान पर जापानी बटेर पालन का व्यवसाय आता है। बटेरों का माँसाहार के रुप में आदि काल से प्रयोग किया जाता रहा है। भारतीय बटेरों का शिकार प्रायः उनके औषधीय गुणों व उत्तम स्वाद हेतु किया जाता रहा है। अत्यधिक माँग व निरन्तर शिकार होने के कारण बटेरों की भारतीय प्रजातियाँ विलुप्त होने की कगार पर पहुँच गई हैं। अतः भारत सरकार द्वारा इन विलुप्त–प्रायः बटेरों को वन्यजीव संरक्षण अधिनियम–1972 के अन्तर्गत संरक्षण प्रदान किया गया तथा भारतीय बटेरों के पालन व शिकार को पूर्णतः निषिद्ध कर दिया गया। तदुपरांत, जापनी बटेर (कुटरनिक्स कुटरनिक्स जेपोनिका) को भारत में सर्वप्रथम केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर द्वारा कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, डेविस, संयुक्त राज्य अमेरिका (1974), कोरिया व जर्मनी (1978) से लाया गया था। केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान द्वारा जापानी बटेरों को भारत में लाया जाना एक मील का पत्थर साबित हुआ तथा इन बटेरों को बाजार मांग के अनुरुप विकसित किया गया। बीसवीं पशु गणना (2019) के अनुसार देश मे साठ लाख से अधिक जापानी बटेरें हैं जिनमे 19 वीं पशु गणना के सापेक्ष लगभग 565% की वृद्धि हुई है। जापानी बटेर, भारतीय बटेरों की तुलना में अधिक शारीरिक भार वाली तथा अधिक अण्डे देने वाली प्रजाति है। भारतीय बटेरों के 60–70 ग्राम वजन की तुलना में इनका वजन लगभग 200–225 ग्राम होता है। इसी प्रकार जापानी बटेरें अपनी रोग प्रतिरोधकता व लघु संतति अन्तराल के लिए जानी जाती हैं। इनका पालन किसी भी प्रकार के वातावरण में किया जा सकता है। अतः जापानी बटेरों का व्यवसाय समूचे भारत में कहीं भी करने के लिए अनुकूल है। जापानी बटेरें, साथ ही साथ, जनसाधारण में प्रचलित "आम" चिकेन के सापेक्ष विशिष्ट वर्ग के लिए एक 'खास' विकल्प प्रस्तुत करती हैं। दक्षिण भारत में जापानी बटेरें अच्छी पैठ बना चुकी हैं, परन्तु उत्तरी भारत में जापानी बटेरों का पूरे तौर से बाजारीकरण नहीं हुआ है, हालाँकि अत्यधिक माँग लगातार बनी हुई है। अपनी "विशिष्ट" विशेषताओं व वर्ग विशेष की प्रतिष्ठा का प्रतीक बन चुकी जापानी बटेरें भारतीय बाजार में अपार संभावनाओं से परिपूर्ण हैं।

संस्थान ने सफेद बटेरों सहित 6 विभिन्न रंगों की प्रजातियाँ विकसित की हैं। पूर्व में भारत सरकार ने सफेद बटेरों के पालन, प्रजनन एवं व्यवसाय के लिए खुला पत्र जारी किया था। जैसा कि सर्वविदित है कि जो प्रजातियाँ विलुप्त होने लगती हैं, उन्हें वन्य संरक्षण अधिनियम 1972 के अंतर्गत विभिन्न वर्गों में रखा जाता है, उन्हीं वर्गों की सूची तीन एवं चार में सभी प्रकार की बटेरों को रखा गया था, जिसके कारण जापानी बटेरों के व्यवसाय हेतु भी एक वैध लाइसेंस की आवश्यकता पड़ती थी। संस्थान के अथक् व सतत् प्रयासों के फलस्वरूप जापानी बटेरों को वन्य संरक्षण अधिनियम 1972 की सूची से बाहर कर दिया गया है। अतः अब बटेर पालन एवं प्रजनन के लिए अलग से लाइसेंस लेने की आवश्यकता नहीं है।

जापानी बटेर एवं भारतीय देशी बटेरों में अन्तर

	जापानी बटेर (पालतू बटेर)	**भारतीय देशी बटेर (जंगली बटेर)**
1.	पंखों के आधार पर सफेद, लाल, काली (फरोह), भूरी एवं काली सफेद पंखो में पाई जाती है।	जंगली बटेरों में सिर्फ एक ही रंग काला (फरोह) पाया जाता है।
2.	पाँच सप्ताह में शारीरिक भार 200–225 ग्राम या और अधिक होता है।	जंगली बटेर के सम्पूर्ण जीवनकाल में 60-70 ग्राम से ज्यादा वजन नहीं होता है।
3.	पालतू बटेर वर्ष भर में प्रायः 280–300 अण्डे तक देती है।	ये मौसमी अण्डे देती हैं तथा एक वर्ष में 40–50 अण्डे देती हैं।
4.	पालतू बटेरों में अण्डा बहुरंगीय एवं सफेद, नीले रंगों में पाया जाता है।	जंगली बटेरों में सिर्फ बहुरंगीय अण्डा पाया जाता है।
5.	पालतू बटेर बहुत ही शीघ्र वंशावली को बढ़ाती है।	ये बटेर साल में एक बार ही वंशावली को बढ़ाती है।
6.	पालतू बटेर विदेशी/जापानी उत्पत्ति की है।	जंगली बटेर भारत एवं एशिया महाद्वीप की उत्पत्ति है।

7.	वैज्ञानिक भाषा में कटरनिक्स कटरनिक्स (जापोनिका) नाम है।	वैज्ञानिक भाषा में कटरनिक्स कटरनिक्स (इन्डिका) नाम है।
8.	सघन बिछाली पद्धति में पाला जा सकता है।	सघन बिछाली पद्धति नहीं पाला जा सकता है।
9.	हैचरी से व्यवसायिक स्तर पर चूजे निकाले जा सकते हैं।	इनमें प्राकृतिक (पक्षी द्वारा) रूप से ही चूजा मिलता है।

बटेर पालन निम्न कारणों से आय अर्जन हेतु एक बहुत लाभकारी एवं उत्तम व्यवसाय है।

1. प्रति पक्षी कम जगह की आवश्यकता पड़ती है। एक वर्ग फिट में 5–6 बटेरें पाली जा सकती हैं।
2. बटेरों के लिए बन्द तथा हवादार शेड की आवश्यकता होती है, इसलिए उन्हें गांवों के अतिरिक्त बड़े–बड़े शहरों में घरों की छतों या घर के पिछवाड़े बाड़ा बनाकर भी पाला जा सकता है। परन्तु बटेरों को उनकी उड़ने की प्रवर्ती होने के कारण खुले में नहीं पाला जा सकता है।
3. बटेरों की बीट में चिकेन की बीट से 35–40 प्रतिशत कम आर्द्रता पाई जाती है। इसीलिए अमोनिया, बदबू तथा अपशिष्ट निष्पादन की समस्या नहीं के बराबर रहती है।
4. माँस उत्पादन हेतु बटेरों की 7–9 फसलें (बैच) प्रति वर्ष ले सकते हैं जबकि चिकन में 5–7 बैच ही लिए जा सकते हैं। अतः बटेर पालन से ज्यादा मुनाफा होता है।
5. माँस हेतु जापानी बटेरें कुल 5 सप्ताह में तैयार हो जाती हैं। अतः आय अर्जन जल्दी प्रारंभ हो जाता है।
6. बटेरें 6 सप्ताह में अण्डा उत्पादन शुरु कर देती हैं, 80 प्रतिशत से अधिक अण्डा उत्पादन 8–10 सप्ताह में शुरु हो जाता है। उपभोक्ताओं की मांग के अनुरूप सफेद एवं बहुरंगीय अण्डे उपलब्ध हैं। वहीं मुर्गियाँ 18 सप्ताह में अंडे देना शुरू करती हैं।

7. मादा बटेरों में 280–300 अण्डे प्रति वर्ष देने की क्षमता होती है।

8. बटेर के अण्डों का औसत भार 10–14 ग्राम होता है जबकि मुर्गी के अंडे 50–54 ग्राम के होते हैं।

9. बटेर का अण्डा एक शक्ति कैपसूल की तरह है जिसमें औसतन 13 अमिनो एसिड, 13 फैटी एसिड, 14 मिनरल (सूक्ष्म एवं गौढ़) तथा प्रोटीन की भी प्रचुर मात्रा पाई जाती है।

10. अंडा उत्पादन करने वाली एक बटेर एक दिन में 18 से 20 ग्राम दाना खाती है जबकि माँस हेतु पाली जाने वाली बटेरों को प्रति दिन मात्र 25–28 ग्राम दाना देना होता है। इस प्रकार माँस हेतु बटेर को पाँच सप्ताह में लगभग 650 ग्राम दाने की आवश्यकता होती है। जबकि मुर्ग लगभग 110–130 ग्राम दाना प्रति दिन खाते हैं। इस प्रकार पाँच सप्ताह की उम्र तक एक किलो ग्राम बटेर माँस पैदा करने के लिये 2.5 किलो ग्राम दाना कि आवश्यकता पड़ती है, साथ ही एक किलोग्राम अंडा उत्पादन के लिये करीब 2 किलो ग्राम दानें की आवश्यकता पड़ती है।

11. बटेरों का ऊष्मायन एवं प्रस्फुटन समय (Incubation period) 17±1 दिन होता जबकि चिकेन एवं टर्की में क्रमशः 21 एवं 28 दिन का होता है।

12. माँस वाली बटेरें 5 सप्ताह में बाजार में बेचने के लिए तैयार हो जाती हैं जिनका औसतन शारीरिक भार 200– 225 ग्राम तक हो जाता है।

13. यदि बटेरों के चूजों का वैज्ञानिक विधि से लालन–पालन किया जाये तो मृत्यु दर अधिकतम 5 प्रतिशत तक होती है।

14. मुर्गा उत्पादन में लगभग रु. 5–7/पक्षी टीकाकरण एवं एन्टीबॉयोटिक्स पर खर्च हो जातें है परन्तु बटेरों में कोई भी दवाई एवं टीकाकरण की आवश्यकता नहीं पड़ती है क्योंकि प्रकृति ने इनमें बहुत अच्छी रोग–प्रतिरोधक क्षमता संजोयी है। अतः इनमे बीमारियाँ न के बराबर होती हैं।

15. बटेर एक ऐसा मॉडल पक्षी है जिसे दुनिया भर की विभिन्न प्रयोगशालाओं में 36–40 प्रतिशत तक प्रयोग किया जा रहा है।

16. भारत में भी विदेशों की तरह बटेर पालन विकसित हो रहा है। केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, हरयाणा, पंजाब, आन्ध्र प्रदेश में तो यह एक उद्योग के रुप में विकसित हो चुका है।

17. बटेर के अण्डों में कोलेस्टेरॉल की मात्रा सबसे कम 18.08 मि.ली./ग्राम योक पायी जाती है जबकि असील के अण्डों में 29.09, कड़कनाथ में 22.0 और गिनी फाउल में 18.77 मि.ग्रा. प्रति ग्राम योक पाया जाता है। जापानी बटेर के अंडो की पौष्टिकता मुर्गी के अंडों से कम नहीं होती है।

18. बटेरों के माँस में एक उत्तम माँस की जितनी भी विशेषतायें होती है जैसे कि माँस के मुलायम होना (टेन्डरनेस), प्लाईएवल, रसीला होना (ज्यूसीनैस), वसा रहित तथा कोलेस्टेरॉल कम होना आदि, उपलब्ध हैं। देश में बटेर का माँस विभिन्न शहरों एवं बाजारों में मांग के अनुरूप उच्च दामों में उपलब्ध हो रहा है।

19. आजकल फास्ट फूड संस्कृति तेजी से लोकप्रिय हो रही है अतः बटेर के अण्डे एवं माँस के विभिन्न उत्पाद जैसे कि साल्टेड क्वेल एग, बटेर के अण्डों का अचार तथा तन्दूरी क्वेल, क्वेल सॉसेजेज़ एवं क्वेल मीट स्टिक इत्यादि का भरपूर उपयोग किया जा सकता है। इसके साथ ही यह नगद कमाई का एक बहुत ही उत्तम विकल्प है।

20. प्रथम दो सप्ताह तक बटेरों के लालन पालन में बहुत ध्यान देना होता है जैसे कि 24 घंटे रोशनी, उचित तापमान, बंद कमरा तथा दाना पानी इत्यादि। तीसरे सप्ताह से तंदूरी बटेर व अन्य माँस और अण्डे के उत्पाद बनाकर नकदीकरण किया जा सकता है। इसके बाद इनको साधारण परिस्थितियों में पाला जा सकता है।

बटेर पालन हमारे देश में मुख्यतः दक्षिण भारत में काफी प्रचलित हो चुका है। समय की मांग है कि बटेर पालन कर जीविकापार्जन किया जाये क्योंकि मुर्गी पालन व्यवसाय में पहले से ही काफी संतृप्ति एवं प्रतिस्पर्धा है। बटेर पालन व्यवसाय में कम पूँजी का निवेश करके अच्छी आमदनी प्राप्त की

जा सकती है। बटेर पालन व्यवसाय को अपनाने से पहले उत्पादन सम्बन्धी तकनीकी जानकारी के साथ साथ विपणन व्यवस्था इत्यादि के बारे में भी जानकारी बहुत ही आवश्यक है। बटेर की विपणन व्यवस्था बनाने में लगभग एक वर्ष का समय लग सकता है क्योंकि ग्राहकों तक पैठ बनाने में इतना समय लग जाता है। अतः बटेर पालन व्यवसाय की प्रारंभिक अवस्था में धैर्य बनाये रखना अति आवश्यक है। निम्नानुसार लगभग रु. 3.60 लाख का निवेश करके बटेर पालन व्यवसाय से सघन बिछावन पद्धति में लगभग रु. 25000/— प्रति माह कमाए जा सकते हैं।

जापानी बटेर पालन से रु. 25000/ माह कमाने हेतु प्रोजेक्ट (सघन बिछावन प्रणाली)

तकनीकी मानक

मृत्यु–दर	10%
स्थान	0.2 वर्ग फुट/पक्षी
शरीर भार 5 सप्ताह पर	~200 ग्राम
उत्पादन	700 बटेरें /बैच
आहार खपत	0.65 किलो/बटेर 5 सप्ताह तक
पैनों (शेड) की संख्या	3 (14'x10')
खाद	0.6 (किलो/पक्षी)
जीवित बटेरों का भाव	रु. 90 प्रति

क्रं. सं.	विवरण	ईकाई	मात्रा	दर (रु.)	कुल (रु.)	स्वम् का हिस्सा
I	**अनावर्ती व्यय/स्थाई निवेश**					
a.	शेड (14'x10'x3 no.)	वर्ग फुट	420	170	71400	
b.	कार्यालय/गोदाम (14'x10')	वर्ग फुट	140	200	28000	
c.	उपकरण	संख्या	2100	15	31500	
d.	इनवर्टर बैटरी सहित (1 केवीए)	संख्या	1	20000	20000	
e.	टेम्पो (पुराना उपयोग किया हुआ)	संख्या	1	60000	60000	
f.	ट्यूबवेल	संख्या	1	30000	30000	
g.	अन्य खर्चे	एक मुश्त	-	-	10000	
	कुल (अ)				**250900**	
II	**पूँजी की आवश्यकता (कार्यशील पूँजी सहित)**					
a.	भवन और उपकरण	-	-	-	250900	
b.	चूजे	संख्या	2310	26	60060	
c.	आहार	किलो	683	40	27300	
d.	पानी/विद्युत/दवायें	संख्या	2310	2	4620	
e.	ईंधन (पेट्रोल/तेल आदि)	सप्ताह	5	1000	5000	
f.	श्रमिक (अनुबंधित)	सप्ताह	5	2500	12500	
	कुल (ब)				**360380**	**90095**
				यानि लगभग	**360000**	**90000**

			प्रथम वर्ष			द्वितीय वर्ष व आगे		
			मात्रा	इकाई दर (रु.)	कुल (रु.)	मात्रा	इकाई दर (रु.)	कुल (रु.)
III	आवर्ती व्यय (एक वर्ष के लिए)							
a.	एक दिन के चूजे	संख्या	18480	26	480480	20020	26	520520
b.	आहार / चारा	किलो	10920	40	436800	11830	40	473200
c.	पानी / विद्युत / दवाई	संख्या	18480	2	36960	20020	2	40040
d.	ईंधन (पेट्रोल / तेल आदि)	सप्ताह	52	1000	52000	52	1000	52000
e.	बैटरी (3 साल में बदली जाये)	संख्या	1	4000	4000	1	4000	4000
f.	श्रम (अनुबंधित)	सप्ताह	52	2500	130000	52	2500	130000
g.	अन्य खर्चे	एक मुश्त	-	-	10000	-	-	10000
	कुल (स)				**1150240**			**1229760**
IV	**आय**							
a.	ब्रायलर बटेर (जीवित)	संख्या	16800	90	1512000	18200	90	1638000
b.	खाद	टन	10	800	8064	11	800	8736
c.	खाली कट्टे	संख्या	156	10	1560	169	10	1690
	कुल (द)				**1521624**			**1648426**
V	**उपरिलागत**							
a.	शेड / भवनों पर मूल्यह्रास		-	5%	4970	-	5%	4970
b.	उपकरणों पर मूल्यह्रास		-	10%	14150	-	10%	14150
c.	स्वम् की पूँजी पर ब्याज		-	10%	9010	-	10%	9010
d.	उधार पूँजी पर ब्याज		-	12%	32400	-	12%	32400
e.	भवन रखरखाव खर्च		-	5%	12545	-	5%	12545
	कुल (फ)				**73075**			**73075**
VI	**कुल लागत**				**1223315**			**1302835**
	सकल लाभ (ल=द–स)				**371384**			**418666**
	शुद्ध लाभ (ल–फ)				**298310**			**345592**
	प्रति पक्षी उत्पादन लागत				**72.82**			**71.58**
	प्रति पक्षी शुद्ध लाभ				**17.76**			**18.99**
	प्रति किग्रा शुद्ध लाभ (जिन्दा भार के आधार पर)				**88.78**			**105.49**
	उत्पादन लागत प्रति किग्रा जिन्दा भार				**364.08**			**357.92**
	प्रति पक्षी पूँजी की आवश्यकता				**171.43**			**-**
	इनपुट आउटपुट अनुपात				**1.24**			**1.27**

नोटः उपरोक्त सभी गणनाएँ दिए गए तकनीकी व आर्थिक मानकों पर आधारित हैं। यह मानक परिवेश, स्थान, बाजार तथा निवेशक के तकनीकी कौशल आदि के अनुरूप बदल सकते हैं जिसके कारण प्रोजेक्ट की वित्तीय व्यवहार्यता प्रभावित हो सकती है।

जापानी बटेरों के लिए उत्पादन की बैच अनुसूची (सघन बिछावन प्रणाली)

प्रथम वर्ष					द्वितीय वर्ष				
सप्ताह	GH1	GH2	GH3	उत्पादन	सप्ताह	GH1	GH2	GH3	उत्पादन
1	in				53	700	*	in	700
2	*				54	V	*	*	0
3	*	in			55	in	700	*	700
4	*	*			56	*	V	*	0
5	700	*	in	700	57	*	in	700	700
6	V	*	*	0	58	*	*	V	0
7	in	700	*	700	59	700	*	in	700
8	*	V	*	0	60	V	*	*	0
9	*	in	700	700	61	in	700	*	700
10	*	*	V	0	62	*	V	*	0
11	700	*	in	700	63	*	in	700	700
12	V	*	*	0	64	*	*	V	0
13	in	700	*	700	65	700	*	in	700
14	*	V	*	0	66	V	*	*	0
15	*	in	700	700	67	in	700	*	700
16	*	*	V	0	68	*	V	*	0
17	700	*	in	700	69	*	in	700	700
18	V	*	*	0	70	*	*	V	0
19	in	700	*	700	71	700	*	in	700
20	*	V	*	0	72	V	*	*	0
21	*	in	700	700	73	in	700	*	700
22	*	*	V	0	74	*	V	*	0
23	700	*	in	700	75	*	in	700	700
24	V	*	*	0	76	*	*	V	0
25	in	700	*	700	77	700	*	in	700
26	*	V	*	0	78	V	*	*	0
27	*	in	700	700	79	in	700	*	700
28	*	*	V	0	80	*	V	*	0
29	700	*	in	700	81	*	in	700	700
30	V	*	*	0	82	*	*	V	0
31	in	700	*	700	83	700	*	in	700
32	*	V	*	0	84	V	*	*	0
33	*	in	700	700	85	in	700	*	700
34	*	*	V	0	86	*	V	*	0
35	700	*	in	700	87	*	in	700	700
36	V	*	*	0	88	*	*	V	0
37	in	700	*	700	89	700	*	in	700
38	*	V	*	0	90	V	*	*	0
39	*	in	700	700	91	in	700	*	700
40	*	*	V	0	92	*	V	*	0
41	700	*	in	700	93	*	in	700	700
42	V	*	*	0	94	*	*	V	0
43	in	700	*	700	95	700	*	in	700
44	*	V	*	0	96	V	*	*	0
45	*	in	700	700	97	in	700	*	700

46	*	*	V	0	98	*	V	*	0
47	700	*	in	700	99	*	in	700	700
48	V	*	*	0	100	*	*	V	0
49	in	700	*	700	101	700	*	in	700
50	*	V	*	0	102	V	*	*	0
51	*	in	700	700	103	in	700	*	700
52	*	*	V	0	104	*	V	*	0
	5600	**5600**	**5600**	**16800**		**6300**	**6300**	**5600**	**18200**

प्रति उत्पादन चक्र कुल चूजों की आवश्यकता= 2100 + 210= 2310

in – नए चूजे डालना   * - पलते हुए पक्षी (भरा हुआ शेड)   V – खाली शेड

प्रोजेक्ट सारंश निम्न अनुसार दिया गया है–

पूँजी लागत	2,50,900	यानि लगभग	2,50,000
कार्यशील पूँजी	1,09,480	यानि लगभग	1,10,000
कुल परियोजना लागत	**3,60,380**	**यानि लगभग**	**3,60,000**

इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत निम्नानुसार वित्त पोषण किया जाना प्रस्तावित है।

स्वम् की पूँजी (सीमान्त धन 25%)	रु. 90,000
अवधिक ऋण	रु. 1,87,500
नकद क्रेडिट सीमा	रु. 82,500
कुल परियोजना लागत	**रु. 3,60,000**

देय ब्याज व किश्त अदायगी योजना

ऋण आदायगी की कुल अवधि	45 माह
किश्त स्थगन अवधि	3 माह
बैंक आवधिक ऋण पर लागू ब्याज दर	12.00%
नगद क्रेडिट सीमा पर लागू ब्याज दर	12.00%
सब्याज आवधिक ऋण राशि	रु. 1,87,500
नकद क्रेडिट सीमा राशि	रु. 82,500

वर्ष	सब्याज आवधिक ऋण घटक (रु.)					नगद क्रेडिट घटक (रु.)		वार्षिक आदायगी (रु.)		
	ऋण शेष	मासिक किश्त	वार्षिक अदायगी	शेष	आवधिक ऋण ब्याज	नगदी	ब्याज देय	कुल आदा यगी	कुल ब्याज	कुल मूलधन
I	187500	5352	48169	161138	21807	82500	9900	58069	31707	26362
II	161138	5352	64225	113697	16784	82500	9900	74125	26684	47442
III	113697	5352	64225	60238	10767	82500	9900	74125	20667	53458
IV	60238	5352	64225	0	3987	82500	9900	74125	13887	60238

बटेर पालन से सम्बंधित अन्य जानकारियाँ

जापानी बटेरों की उन्नत किस्में (जननद्रव्य)

बटेर पालन के लिये उत्तम जननद्रव्य केंद्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर में उपलब्ध है। संस्थान द्वारा विकसित बहुरंगी बटेरों की मांग बहुतायत है। अंडा व माँस उत्पादन हेतु उपलब्ध किस्मों की उत्पादकता तथा विशेषताएँ निम्नवत् हैं।

कैरी पर्ल (सफेद अण्डे वाली वंशावली)

50% अण्डा उत्पादन पर आयु	8 सप्ताह
80% अण्डा उत्पादन पर आयु	10 सप्ताह
अण्डा उत्पादन (हेन डे)	285–295 अण्डे

कैरी उत्तम (ब्रायलर बटेर वंशावली)

शरीर भार (5 सप्ताह)	200 ग्राम
आहार दक्षता (5 सप्ताह)	2.8

कैरी उज्जवल (सफेद छाती वाली वंशावली)

शरीर भार (5 सप्ताह)	175 ग्राम
आहार दक्षता (5 सप्ताह)	2.93

कैरी श्वेता (सफेद बटेर)

शरीर भार (5 सप्ताह)	155 ग्राम
आहार दक्षता (5 सप्ताह)	2.90

कैरी ब्राउन (भूरे रंग वाली बटेर)

शरीर भार (5 सप्ताह)	180 ग्राम
लैंगिक परिपक्वता की आयु	38–41 दिन

कैरी सुनहरी (आधी ब्राउन आधी सफेद)

शरीर भार (5 सप्ताह)	185 ग्राम
आहार दक्षता (5 सप्ताह)	2.95

जापानी बटेरों की तुलनात्मक उत्पादकता एवं विशेषतायें

क्र. सं.	प्रजातियाँ	पंखों का रंग	5 सप्ताह में शारीरिक भार	वार्षिक अंडा उत्पादन	अंडे का वजन	हैचिंग प्रतिशत
1.	कैरी पर्ल	जंगली/फरोह	140 ग्राम	290	09 ग्राम	80
2.	कैरी उत्तम	जंगली/फरोह	200 ग्राम	260	14 ग्राम	75
3.	कैरी उज्जवल	सफेद गलकम्बल	175 ग्राम	220	12 ग्राम	70
4.	कैरी श्वेता	संपूर्ण सफेद	155 ग्राम	205	10 ग्राम	72
5.	कैरी ब्राउन	संपूर्ण ब्राउन	180 ग्राम	210	11 ग्राम	65
6.	कैरी सुनहरी	आधी हल्की भूरी आधी सफेद	185 ग्राम	200	12 ग्राम	65

जापानी बटेरों का रख रखाव

आवास एवं प्रकाश प्रबंध

बटेर आवास निर्माण

बटेर आवास का निर्माण प्रति पक्षी न्यूनतम लागत के आधार पर किया जाना चाहिए। धन तथा प्रारंभिक लागत को बचाने के लिए स्थानीय उपलब्ध भवन निर्माण सामग्रियों तथा अकुशल मजदूरों का प्रयोग करके कम खर्च वाले बटेर आवास का निर्माण करना चाहिए। बटेरों के आवास का निर्माण करते समय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के दिशा निर्देशों का पालन किया जाना चाहिए। आवास निर्माण करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना आवश्यक हैः

1. आवास सड़क के समीप हों।
2. भावी विस्तार की संभावनाएँ हों।
3. जल निकासी का उचित प्रबन्ध हो।
4. बटेर आवास खुला हवादार हो।
5. आवास उचित दिशा में हो।
6. आवासों के बीच निश्चित समान दूरी हो।
7. विपणन हेतु पर्याप्त सुविधा हो।
8. मानव आबादी क्षेत्रों से दूर हो।
9. उस क्षेत्र में बिजली व पानी उपलब्ध हो।

बटेरों की ब्रूडिंग/पालन पद्धतियाँ

बटेर पालन निम्न दो पद्धतियों में किया जा सकता है।

पिंजरा पद्धतिः इस पद्धति में बटेर बैटरी ब्रूडर में पाली जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य अधिक चूजों को उचित तापक्रम पर सीमित स्थान में पालना है। बैटरी ब्रूडर में एक के ऊपर एक 5 मंजिल तक पिंजरों को रखा जाता है। प्रत्येक पिंजरे के नीचे

बीट इकट्ठा करने के लिए ट्रे लगी होती है। प्रत्येक मंजिल/पिंजरे में 2 भाग होते हैं– ऊष्मायन भाग तथा खुला भाग। यह बिजली की सहायता से चलाया जाता है। ऊष्मा प्रदान करने के लिए ऊष्मायन भाग में बल्ब अथवा हीटर लगा रहता है। तापमान थर्मोस्टेट से नियंत्रित किया

जाता हैं। ब्रूडर का ऊष्मायन भाग और कमरे का तापक्रम पक्षियों की सुविधा अनुसार नियंत्रित किया जाता है। ब्रूडर के कमरे का तापमान 70 से 75 डिग्री फॉरेनहाइट होना चाहिए। आरंभ में होवर के नीचे तापमान 100 डिग्री फॉरेनहाइट होना चाहिए। जैसे जैसे चूजे बड़े होते

जाते हैं उनकी कृत्रिम ऊष्मा की आवश्यकता कम होती जाती है। अतः हर चौथे दिन तापमान 5 डिग्री फॉरेनहाइट कम किया जाता है जब तक कि यह 70 से 75 डिग्री फॉरेनहाइट (कमरे के सामान्य तापमान के बराबर) ना हो जाये। यदि चूजे ऊष्मा स्रोत से काफी दूर

हों तो जान जाना चाहिए कि तापमान चूजों की आवश्यकता से अधिक है और यदि चूजे उष्मा स्रोत के पास इकट्ठे होते हों तो तापमान आवश्यकता से कम है। इसी को ध्यान में रखते हुए तापमान का नियंत्रण करना चाहिए। तापमान चूजों की आवश्यकता के अनुसार हो तो चूजे चारों ओर समान रूप से फैले रहते हैं। 160 सेंटीमीटर लंबाई, 80 सेंटीमीटर चौड़ाई, तथा 28 सेंटीमीटर ऊंचाई वाले पिंजरे की एक टियर (मंजिल) में 100 चूजे 5 सप्ताह तक पाले जाते हैं। इस प्रकार एक बैटरी ब्रूडर के 5 टियर में 500 चूजे पाले जा सकते हैं। पिंजरों के फर्श पर खुरदुरा कागज (कोरुगेटेड शीट) बिछाना अति आवश्यक है जिससे चूजों को चलने में कठिनाई ना हो। इसे 7–10 दिन बाद हटा देना चाहिए।

सघन बिछावन पद्धतिः इस पद्धति में चूजों को ऊष्मायन यंत्र (होवर) के नीचे फर्श पर पाला जाता है। होवर लकड़ी या टीन का, 3 फीट x 8 फीट आकार का बना होता है जिसमें 500 चूजे पाले जा सकते हैं। फर्श पर करीब 5 से.मी. मोटाई की बिछाली की तह बिछा दी जाती है। बिछाली साफ और सूखा होना अति आवश्यक है जो धान का छिलका, लकड़ी का बुरादा, छीलन, धान का पुवाल, सूखे पत्ते इत्यादि कुछ भी हो सकता है। होवर से 50 से.मी. की दूरी पर बाड़ लगा दी जाती है जिससे कि चूजे ऊष्मा–स्त्रोत के निकट बने रहें। तापमान का निर्धारण पिंजरा पद्धति के अनुसार ही किया जाता है तथा फर्श पर खुरदरा कागज (कोरुगेटेड शीट) भी बिछाया जाता

है। पिंजरा पद्धति में आरंभिक लागत बिछाली पद्धति से ज्यादा है परन्तु इसमें ब्रूडिंग के दौरान चूजों में मृत्यु दर कम होती है क्योंकि तापक्रम को नियंत्रित करना पिंजरा पद्धति में ज्यादा आसान है। बटेर के चूजों को पालने के लिए फर्श, प्रकाश व्यवस्था, आहार व्यवस्था तथा सफाई का ज्ञान अति आवश्यक है। 0–3 सप्ताह के चूजे के लिए पिंजड़ा तथा बिछावन दोनों ही पद्धतियों में 150 वर्ग सेमी. (0. 16 वर्ग फिट) की आवश्यकता होती है। 3–5 सप्ताह तक लगभग 200 वर्ग सेमी. (0.20 वर्ग फिट) की आवश्यकता होती है।

बटेर के चूजों को शुरू में छोटी प्लेटों में आहार दिया जा सकता है। तत्पश्चात, आहार के लिए विशेष रूप से बने दाने और पानी के बर्तनों में प्रति चूजा क्रमशः 2–3 सेंटीमीटर तथा 1–1.5 सेंटीमीटर स्थान उपलब्ध करना चाहिए। चूजा घर/पिंजरों में 24 घंटे सभी जगह प्रकाश समान रूप से बनाए रखना चाहिए। यदि ऊष्मा प्रदान करने के लिए बल्ब के अतिरिक्त किसी अन्य साधन का प्रयोग किया जा रहा हो तो प्रकाश बनाए रखने के लिए, चूजा घर में प्रति 100 वर्ग फुट क्षेत्रफल के लिए 40 वाट का अथवा बैट्री ब्रूडर की प्रत्येक मंजिल के लिए 15 वाट का बल्ब प्रयोग किया जाना चाहिए। यदि ऊष्मा का स्त्रोत बल्ब ही हो तो इसकी संख्या और क्षमता प्रत्येक टियर/चूजा घर के लिए इतनी रखनी चाहिये कि चूजे सामान्य रूप से पूरे टियर/चूजा घर में बिखरे रहे। व्यस्क बटेरों या अंडा देने वाली बटेरों

के लिए 16 घंटे प्रकाश और 8 घंटे का अंधेरा जरुरी है। बटेरों में माँस उत्पादन वृद्धि करने के लिए, बाजार भेजने से पहले 7–10 दिन तक 8 घंटे प्रकाश और 16 घंटे अंधेरा रखना जरुरी है।

आहार प्रबंध

उत्तम वृद्धि के लिए अच्छी आहार व्यवस्था बहुत आवश्यक है। बटेरों को विभिन्न आयु में उनके शारीरिक विकास, अंडा उत्पादन, प्रजनन एवं स्वास्थ्य स्थिति के अनुसार पोषण की आवश्यकता होती हैं। इस कारण बटेरों को विभिन्न आयु वर्ग में संतुलित आहार देने के लिए निम्नलिखित तीन प्रकार के आहार देना अत्यन्त जरुरी है।

1. **बटेर स्टार्टर आहार**– यह एक दिन से लेकर 3 सप्ताह तक दिया जाता है। इस अवधि में शारीरिक बढ़वार बहुत तीव्रता से होती है, पंखों का तेजी से विकास होता है और चूजों में मृत्यु दर भी अधिक होती है। इस अवस्था में उन्हें पोषक तत्वों की आवश्यकता अधिक होती है। इस अवधि में बटेरों के आहार में कम से कम 26 प्रतिशत प्रोटीन व 2800 किलो कैलोरीज मैटाबोलाइजेबिल एनर्जी (ऊर्जा) प्रति किलोग्राम होना आवश्यक है।
2. **बटेर ग्रोवर आहार**– यह 3 से 5 सप्ताह की आयु तक दिया जाता है जिसमें चूजों की शारीरिक विकास की गति पहली अवस्था से कुछ कम होती है। अतः इसमें प्रोटीन की मात्रा ऊर्जा के सापेक्ष कुछ कम हो जाती है। इस अवस्था के संतुलित आहार में 24 प्रतिशत प्रोटीन व 2800 किलो कैलोरीज मेटाबोलाइजेबिल एनर्जी प्रति किलोग्राम राशन के अनुसार होना आवश्यक है।
3. **बेटर लेयर आहार**– यदि बटेरों का पालन अंडा उत्पादन के लिए किया जा रहा हो तो उन्हें लेयर आहार 6 सप्ताह की आयु से देना प्रारंभ कर देना चाहिए चूँकि बटेरों में अण्डा उत्पादन 6 सप्ताह की आयु से प्रारम्भ हो लगभग एक वर्ष तक होता है। इस अवधि में बटेरें 270 से 300 अण्डे देती हैं जो किसी भी उत्तम अण्डा देने वाली मुर्गियों के

समकक्ष है। इस अवस्था में बटेरों से अधिकतम अण्डा उत्पादन प्राप्त करने के लिए आहार में नुनतम 20 प्रतिशत प्रोटीन, 2700 किलो कैलोरीज मेटाबोलाइजेबिल एनर्जी प्रति किलोग्राम तथा 3 प्रतिशत कैल्शियम होना आवश्यक है।

आहार सम्बंधित ध्यान देने योग्य कुछ बातें

1. बटेर की आहार खपत का विवरण रखें, साथ ही इसकी निर्धारित खपत के साथ तुलना करें। पाँच सप्ताह की आयु तक आहार खपत की मात्रा प्रति चूजा लगभग 650 ग्राम होती है, इसके बाद यह 25 से 30 ग्राम प्रति चूजा प्रतिदिन हो जाती है।
2. आहार का भण्डारण सूखे हवादार स्थान पर करें व 15 दिन से अधिक का आहार बनाकर न रखें, अन्यथा आहार की गुणवत्ता में कमी आ सकती है।
3. बटेरों को उनकी आयु वर्ग के अनुसार ही स्टार्टर, ग्रोवर तथा लेयर आहार देना चाहिए ताकि उनकी पोषक तत्वों की आवश्यकताएँ पूरी हो सकें।
4. पहले दो सप्ताह तक बटेर के चूजों का आहार महीन चूर्ण के रुप में होना आवश्यक है, इसके बाद कुछ बड़े दानों के रुप में आहार दिया जा सकता है।
5. प्रारंभिक 3–4 दिनों तक चूजों का आहार फर्श पर बिछे कागज पर बिखेर देना चाहिए जिससे चूजे खाना सीख सकें। जब चूजे आहार खाना सीख जायें तो आहार पात्रों का उपयोग करें।
6. आहार पात्रों को केवल दो तिहाई भाग तक ही भरें अन्यथा कुछ दाना चुगते समय बिखर सकता है।
7. पक्षियों की संख्या एवं आयु के अनुसार आहार पात्र निर्मित होने से आहार कम व्यर्थ होता है एवं पक्षी अच्छी तरह आहार ग्रहण कर पाते हैं। आहार पात्रों की बनावट इस प्रकार हो कि बटेरें इनके अन्दर न जा सकें एवं वे आहार को दूषित कर बिखराव न करने पायें।

8. आहार पात्रों की ऊँचाई बटेर की पीठ के समकक्ष होनी चाहिए।

9. स्वच्छ पानी की उचित मात्रा पक्षियों को हर समय उपलब्ध रहनी आवश्यक है।

10. बटेरों का बार–बार स्थान बदलने, रोशनी कम होने, उन्हें पकड़ने इत्यादि से आहार दक्षता कम हो जाती है तथा आहार की खपत के अनुरूप उत्पादन नहीं मिल पाता है। अतः ऐसी स्थति उत्पन्न न होने दें, इससे आहार व्यय कम होगा। यदि आहार अपना खुद का ही बना रहे हों तो निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें।

    - आहार से भरपूर लाभ प्राप्त करने के लिए आहार के विभिन्न संघटकों को अच्छी तरह मिलाना चाहिए ताकि वे पूरे आहार में समान रुप से अच्छी तरह मिल जाये, अन्यथा आहार हेतु फार्मूला बहुत अच्छा होने पर भी आहार से पूरा लाभ नहीं मिल पाता है।
    - अनाज तथा अन्य वनस्पतिक अवयवों को आहार में मिलाने से पहले यथोचित आकार में पीस लेना चाहिए। एक–एक करके उन्हें मिक्सर मशीन में डालकर अच्छी तरह 10–15 मिनट तक मिलाना चाहिए। जो आहार संघटक सूक्ष्म मात्रा में मिलाये जाने हों जैसे खनिज तत्व, विटामिन इत्यादि, उन्हें पहले अलग से बारीक पिसे मक्का या किसी अन्य संघटक में पूर्व मिश्रण (प्रीमिक्स) बना लेने के बाद मिक्सर मशीन में डाला जाना चाहिए।

जापानी बटेरों हेतु किफायती आहार सूत्र

खाद्य सामग्री	(मात्र किलो में प्रति 1000 किलो आहार हेतु)		
	स्टार्टर राशन 0–3 सप्ताह	ग्रोवर राशन 3–5 सप्ताह	लेयर राशन >6 सप्ताह
पीली मक्का	466	443	421
सोयाबीन की खल, तेल रहित	373	336	300
सरसों की खल, तेल रहित	35	50	50
सोयबीन का तेल	5.3	7.45	5.25
चावल की किनकी (टूटा हुआ)	80	125	125
चूना पत्थर पाउडर	8.6	8.5	36
चूना पत्थर चिप्स	0	0	37
साधारण नमक	3	2.8	3
डाई कैल्शियम फास्फेट	18	17	14.5
फाईटेज, 10000	0.5	0.5	0.5
सूक्ष्म खनिज मिश्रण	1	1	1
विटामिन मिश्रण	0.3	0.3	0.3
डी. एल. मिथियोनिन	1.6	1.4	1.2
एल. लाइसिन	2.8	2.6	0.8
एल.– थ्रिओनीन	0.8	0.6	0.6
कोलीन क्लोराइड 60%	0.8	0.8	0.8
डीक्लाजुरिल 0.5%	0.25	0	0
लिवोलिव	0.5	0.5	0.5
विष संयोजक (Toxin binder)	1	1	1
मीठा सोडा	1	1	1
हर्बल एंटी–माइक्रोबियल	0.3	0.3	0.3
फीड एंजाइम	0.25	0.25	0.25
योग	**1000**	**1000**	**1000**

जापानी बटेरों में स्वास्थ्य प्रबंध

जापानी बटेरें कुक्कुट में होने वाली आम बीमारियों के प्रति रोग रोधक क्षमता रखती है। यही कारण है कि जापानी बटेरों में टीकाकरण व दवाइयों की बहुत कम आवश्यकता पड़ती है तथापि, जापानी बटेरों में कभी कभार होने वाले रोगों की जानकारी आवश्यक है, जो की निम्नवत् है।

ई.डी.एस.

यह एक विषाणु जनित रोग है जो बटेर में एविएडिनो नामक विषाणु द्वारा उत्पन्न होता है। बटेरों में इस रोग का प्रकोप होने के कारण स्वस्थ दिखाई देने वाली एवं अण्डज बटेरों में अण्डा उत्पादन अचानक कम हो जाता है। इसके साथ–साथ बिना छिलके या पतले छिलके के अण्डों का उत्पादन होता है। प्रायः इस बीमारी का प्रकोप बटेर में तब होता है जब बटेरों में अण्डा उत्पादन चरम सीमा पर होता है, जिसके कारण अत्यधिक आर्थिक हानि होती है।

इस रोग से बचाव के लिए मुर्गियों में अपनाये जाने वाले ई.डी.एस. का टीका बटेर में लगाने से इस रोग के प्रति रोधक क्षमता बढ़ाई जा सकती है। इस रोग से बचाव के लिए बटेरों को हमेशा संतुलित आहार देना चाहिए ताकि इनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बनी रहे। इसके साथ–साथ जैव–सुरक्षा के उचित उपाय अपनाने चाहिए।

बटेरों का लीची रोग

लीची रोग भी एक विषाणु जनित रोग है। यह बीमारी अल्पव्यस्क बटेरों को 3 से 6 सप्ताह की आयु में प्रभावित करती है। इस रोग से प्रभावित पक्षी सुस्त दिखाई देते हैं तथा मृत्युदर अधिक बढ़ जाती है। शव–परीक्षण करने पर यकृत का आकार बढ़ा हुआ पाया जाता है। हृदय की बाहर की झिल्ली में पानी भरने के साथ–साथ झिल्ली का शोथ भी हो जाता है।

चूंकि यह एक विषाणुजनित रोग है अतः इसके उपचार के लिए बटेरों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना आवश्यक है जिसके लिए विटामिन सी व ई दिया जाना चाहिए। बीमार बटेरों को 3–5 दिनों तक एंटीबायोटिक्स भी दिया जाना चाहिये। लीवर टोनिक भी दुगनी डोज में देना चाहिए।

बटेर पोम्स

यह जापानी बटेरों में होने वाली संक्रामक बीमारी है जो एविपोक्सॅ नामक विषाणु से उत्पन्न होती है। यह रोग अल्पव्यस्क एवं व्यस्क दोनों ही आयु की बटेरों में पाया जाता है। प्रभावित पक्षी के पंखविहीन स्थानों जैसे आंखों के आस–पास, मुँह के कोन पर, पंखों की चोटियों पर, गुदाद्वार के आस–पास तथा पैरों पर छाले दिखाई देते हैं। यद्यपि इस बीमारी में मृत्युदर कम रहती है, लेकिन बटेरों में अस्वस्थता की दर बहुत अधिक होती है जिसके कारण प्रभावित बटेरों में अण्डा उत्पादन कम हो जाता है एवं शारीरिक वजन घट जाता है। इस बीमारी से निजात पाने के बाद भी बटेरों के पंजों के भाग गल कर गिरते रहते हैं जिससे पक्षी लंगड़ापन के शिकार हो जाते हैं ।

इस बीमारी से बचाव हेतु फाउल पॉक्स का टीकाकरण करना चाहिए। रोग फैलने की स्थिति में रोगग्रसित पक्षियों को पीने के पानी में एंटीबायोटिक्स देना चाहिए। घावों पर एंटीसेप्टिक क्रीम लगानी चाहिए।

मेरेक्स रोग

यह मुर्गियों को तीव्र रुप में प्रभावित करने वाला विषाणु जनित रोग है, जो बटेर प्रजाति के पक्षियों में भी देखा गया है। यद्यपि यह रोग बटेर पक्षियों में नसों को प्रभावित नहीं करता, परन्तु शरीर के अंगों जैसे यकृत, प्लीहा, गुर्दों, हृदय एवं ज्ञानेन्द्रियों में गाँठें पैदा करता है।

इस रोग से बचाव हेतु जैव सुरक्षा के सभी नियमों का कड़ाई से पालन करना चाहिए तथा बटेरों को नियमित रूप से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले कारक पीने के पानी व आहार में दिए जाने चाहिए।

न्यूकैसल रोग (एन.डी.)

यह एक विषाणु जनित रोग है, जिसका प्रकोप बटेरों में बहुत कम देखा गया है। यह बीमारी बटेरों में कदाचित स्थानों पर देखी गई है। मुर्गियों में इस बीमारी से उत्पन्न लक्षणों से मिलते–जुलते लक्षण बटेरों में भी देखे गये हैं। यह रोग बटेरों में किसी भी आयु में उत्पन्न हो सकता है। इस रोग का अधिक प्रकोप नहीं देखा गया है, इसलिए इसके बचाव हेतु टीकाकरण भी नहीं अपनाया गया है।

इस रोग से बचाव हेतु बटेरों को संतुलित आहार दिया जाना चाहिए। साथ ही फार्म में जैव सुरक्षा के सभी नियमों का कड़ाई से पालन करना चाहिए। बटेरों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए तथा जैव शक्ति उत्तेजक दिए जाने चाहिए।

अल्सरेटिव आंत्र शोध

यह एक तीव्र एवं भयंकर संक्रामक रोग है, जो क्लोस्ट्रिडियम कोलीनम नामक जीवाणु से उत्पन्न होता है। इस रोग में आँतों तथा अन्धनाल में घाव बन जाते है। यह रोग अचानक उत्पन्न होता है एवं मृत्युदर अत्याधिक होती है। इस रोग के कारण मृत्युदर 100 प्रतिशत तक भी पहुँच जाती है। इस रोग का फैलाव प्रभावित पक्षियों के मल से संदूषित दाना या पानी पीने से होता है। इसके वाहक पक्षियों से भी यह रोग फैलता है। मक्खियाँ भी इस रोग को फैलाती हैं। यह जीवाणु गर्म पानी में तीन मिनट तक जीवित रह सकता है। इस रोग से पक्षियों में बेचौनी होना, गर्दन पीछे की ओर खींचना, पंख लटक जाना, आँखें आधी बन्द कर लेना, पंखों की बनावट का बिगड़

जाना, खून की कमी होना तथा पानी जैसे सफेद दस्त लगना प्रमुख लक्षण हैं। शव–परीक्षण करने पर आँतों के ज्यादातर हिस्सों में गहरे घाव पाये जाते हैं, परन्तु अधिक घाव इलियम तथा अन्धनाल के क्षेत्र में पाये जाते हैं, जो गोल या चपटे होते हैं। आँतों में खून दिखाई देता है व उत्तकक्षयी चिन्ह नजर आते हैं, पेट की झिल्ली का शोथ पाया जाता है, शरीर की झिल्लियों का रंग पीला हो जाता है।

इस रोग का उपचार एन्रोफ्लोक्सासिन, सिप्रोफ्लोक्सासिन या टैटरासाइक्लीन एन्टीबॉयोटिक, आदि को पानी या आहार में मिलाकर देने से किया जा सकता हैं। प्रभावित पक्षियों को मल्टीविटामिन का घोल पिलाना चाहिए। प्रयोग किये जाने वाले आहार की सूक्ष्म जैविक गुणवत्ता की जाँच की जानी चाहिए। फार्म में मक्खियों का प्रवेश नहीं होने देना चाहिए। साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

टीकाकरण

बटेरों में किसी प्रकार का टीकाकरण नहीं करना पड़ता है क्योंकि इनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है। बटेर आहार में 5 प्रतिशत सूखा हुआ केजीन (फटे दूध का सफेद भाग) मिलाने से मृत्युदर कम और अच्छी शारीरिक वृद्धि होती है और औषधि के रुप में मिनिरल और विटामिन सप्लीमेंट दिए जाते है।

लिंग पहचान

बटेरों के लिए लिंग की पहचान मुर्गी चूजों की तरह एक दिन की आयु पर की जाती है। परंतु तीन सप्ताह की आयु पर पंखो के रंग के आधार पर लिंग की पहचान की जा सकती है। नर बटेरों के गर्दन के नीचे के पंखों का रंग लाल, भूरा, धूसर होता है, वही मादा की गर्दन के नीचे के पंखों का रंग हल्का लाल और काले रंग के धब्बेदार होता है। मादा बटेरों के शरीर का भार नर से 15 से 20 प्रतिशत अधिक होता है।

प्रशिक्षण

जापानी बटेर पालन करने के लिए सर्वप्रथम प्रारम्भिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इस प्रशिक्षण को प्राप्त करने के लिए निदेशक, केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर से पत्राचार के माध्यम या टेलीफोन से सम्पर्क किया जा सकता है। संस्थान लघु अवधि कुक्कट पालन एवं प्रबंधन प्रशिक्षण (6 दिन) व बटेर पालन पर 12 दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यकृम समय समय पर आयोजित करता है।

ICAR-Central Avian Research Institute

Izatnagar - 243 122 (U.P)

Agri-business Incubation Centre

Developing startup ecosystem for steering poultry entrepreneurship

Orientation & Specialized Training → Mentorship by Domain Experts → Incubation Services

Focus areas

1. Commercial Poultry Farming
2. Feed Formulation
3. Poultry Health Care
4. Hatchery Operation
5. Organic Poultry Farming
6. Poultry Meat/Egg Processing
7. Management Tools
8. Breeding Flock Management
9. Poultry Waste Management

Our Support

- Project report formulation
- Statutory compliance
- Marketing format design
- Marketing strategies
- Social media platform
- Client feedback analysis

ABI Core Activities

- Incubation Services
- Consultancy Services
- Business Development Support
- Capacity Building & Training
- Upscaling Technologies
- Intellectual Property Management

Dr Sandeep Saran, PI - ABI
ICAR - Central Avian Research Institute, Izatnagar
Tel: 0581-2300948, 2303223
Email: ssaran1965@gmail.com
sandeep.saran@icar.gov.in

For more details: www.facebook.com/CARI1979 www.icar.org.in/cari

जापानी बटेर पालन से रु. 25000 प्रति माह कैसे कमाएं!

कैरी श्वेता

कैरी पर्ल

कैरी सुनेहरी

प्रकाशक

डॉ. अशोक कुमार तिवारी

निदेशक

भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान

इज्ज़तनगर–243 122, बरेली (उ.प्र.), भारत

Email: cari.director@icar.gov.in

द्वारा

डॉ. संदीप सरन

प्रभारी

प्रधान वैज्ञानिक, प्रभारी, आई.टी.एम.यू. / ए.बी.आई. केन्द्र

संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन इकाई

Email: ssaran1965@gmail.com, sandeep.saran@icar.gov.in

ए.बी.आई. टीम

रघुविन्दर कुमार

डिजिटल कंटेंट मैनेजर

मो. 8077932617

वैभवी कटरु

बिज़नेस एक्जेक्यूटिव

मो. 7895084010

EPBAX: +91-581-2301220, 2303223/Ext. 3004, 2300948 (O); Mobile: +91-9412823436

Fax: +91-581-2301321, https://cari.icar.gov.in